ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

2016-17

# विवेक विचार विमर्श

-: संपादक मंडल :-
प्राचार्य डॉ.अनार साळुंके
प्रा.डॉ.विनोदकुमार वायचळ
प्रा.डॉ.प्रशांत चौधरी
प्रा.डॉ.अर्चना बनाळे
प्रा.डॉ.मिलिंद माने
प्रा.संजय जोशी

ISBN : 978-93-5240-089-8

ISBN :978-93-5240-089-8

# अनुक्रम


... विवेकानंद की विचारधारा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव-डॉ.महेंद्र ठाकुरदास/१

२. विवेकानंद के जीवन दर्शन का साहित्य पर प्रभाव - डॉ.रामकुमार रामरिया/२१

३. स्वामी विवेकानंद के विचारों का हिंदी साहित्यकारों पर प्रभाव- डॉ.ललिता राठोड/२९

४. 'तोडो कारा तोडो' मे चित्रित स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद-डॉ.सुरेश भिमराव गरूड/३५

५. स्वामी विवेकानंद की विचारधारा का हिंदी काव्य पर प्रभाव - प्रा.डॉ.शेख मोहम्मद शाकीर/४३

6. Sister Nivedita's Analysis of Swami Vivekananda's Philosophy -Dr. Anar Ravindra Salunke/47

7. Vivekananda's Concept of Religion and its Application Today- Dr. Archana R. Banale/52

8. Swami Vivekanand: Sustaining Source of Inspiration - Dr.Sangeeta S. Sasane/ Dr.Arjun Galphade/57

9. Vivekananda, Vedanta, and Wave Functions: Exploring the Co-relation between '*Brahman*'and Modern Physics- Dr.Jyotsna Dattatraya/Adv.Chinmay Deshmukh/61

10.Relevance of Swami Vivekananda's thoughts for today - Sachin S. Mahajan/66

11.A Perspective: Swami Vivekananda and Literature- A.J.Khune /74

१२.स्वामी विवेकानंद और इस्लाम-मो.आसिफ अली/७७

१३.स्वामी विवेकानन्द जी और ईसाई धर्म : डॉ. नरेन्द्र कोहली जी रचित उपन्यास 'न भूतो न भविष्यति' के विशेष सन्दर्भ में-प्रा. भीमराज रंगनाथ दळवी/८०

१४.निराला पर स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव-डॉ. संतोष मोटवानी/८३

१५.स्वामी विवेकानंद का दलित दर्शन-डॉ.वडचकर एस.ए. /८७

१६.'योद्धा संन्यासी : स्वामी विवेकानंद' का कथासार-डॉ. अनघा तांदळकरी/९२

१७.स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव निराला के विशेष संदर्भ में -प्रा.डॉ. बालाजी गरड/९५

१८.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र पर प्रभाव- प्रा.बालिका रामराव कांबळे/९९

१९.स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक विचारधारा - डॉ. साकोळे दत्ता शिवराम/१०२

२०.स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का भारतीय चलचित्र विधा पर प्रभाव : जी. व्ही. अय्यर निर्देशित चलचित्र 'स्वामी विवेकानन्द'के विशेष सन्दर्भ में-डॉ.विनोदकुमार


R. Ganesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

ISBN :978-93-5240-089-8

# स्वामी विवेकानंद का दलित दर्शन

डॉ.वडचकर एस.ए.
मो. ८९८३८४८७८८
कै.रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ
जि.परभणी

हिंदी में दलित साहित्य एवं दलित दर्शन की खूब चर्चा अधुनिक समय में हो रही है राजनीति के समान साहित्य मे भी दलित राजनीति केंद्र में आ गई है। दलितो के मसीहा डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकर जी ने अपने अनुयायियों के साथ मनुस्मृती का दहन करके तथा भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभुमि' को जलाकर समाज की राजनीति और साहित्यिक मापदंडो के प्रश्न को राष्ट्रीय चिंतन का विषय बनवाया डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के बाद एक लेखको की पीढी आई उन्होने कबीर को दलित धर्म के प्रणेता घोषित किया। ज्योतिबा फुले पेरियार रामस्वामी, स्वामी अछुतानंद जैसे लोगों के नाम भी दलित चिंतन प्रवाहमें आये किंतु यह आश्चर्यजनक बात है कि दलितोद्धार एवं दलित अधिकारों के साथ ब्राम्हण पुरोहितवाद तथा अस्पृश्यता के विरूध कठोर आवाज उठानेवाले स्वामी विवेकानंद की किसी ने चर्चा तक नही की। जिन्होने संसार और मानवता के कल्याण हेतु अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया था। विवेकानंद का अविर्भाव १२ जनवरी १८६३ में कोलकता में हुआ। उनतालीस वर्ष की अल्पायु में उन्होने जो किया वह अन्यत्र दुर्लभ है। संन्यासी जीवन प्राप्त करने के बाद सिर्फ चौदह वर्ष में उन्होनें कार्य किया। अपने नाम के अनुरूप विवेकानंद विवेक+आनंद को अपने सत्कर्म और भारत माता के लिए उनका समर्पण और त्याग हमारे लिए अनुकरणीय रहा है।

स्वामी विवेकानंद १९ वी शताब्दी के अंत और २० वी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो में देश में दलित–चेतना की आधारशिला बनकर अवतरित हुए थे। अपने जीवन के कुछ प्रसंगों से हमे जानकारी मिलिती है कि नरेंद्रनाथ दत्त छह सात वर्ष के थे तो पिता की अनुपस्थिति में हुक्कों को मुँह लगाकर कश खींच रहे थे। क्योंकि वह हुक्का भिन्न –

Dist. Parbhani



भिन्न जाति के मुवक्किलों ने मुहँ लगाकर खींचा था नरेंद्र ने जुठे तंबाकू को पीकर उसपृश्यता के पाखंड का परदाफाश किया था। हिमालय पर भ्रमण करते वक्त मुसलमान ने उनको खीरा खिलाकर प्राणरक्षा की थी। भंगी के साथ भोजन किया था,चमार के साथ भोजन बनाकर खाया था, इन सभी बातों से पता लगता है कि उपेक्षित नीच जाति के लोगों के हृदय की श्रेष्ठता इन में थी। व्यक्ति अपने सद्गुणों और सत्कर्मो के कारण ही संसार मे पूज्य होता है। वह महान और श्रेष्ठता का पद प्राप्त करता है अपने पवित्र और संस्कारयुक्त विचारों से विवेकानंद ने अपने अत्यल्प समय में ही ज्ञान, विवेक, धर्म, अध्यात्म और मनुष्यता की एसी लौ प्रज्वलित की, प्रशस्य संस्कृति उसकी महिमा राष्ट्रीयता तथा वसुधैव कुटुंम्बकम की भावना को पूरे विश्व में प्रसारित किया।

स्वामी विवेकानंद हिंदु धर्म को संसार का सर्व श्रेष्ठ धर्म मानते थे और आध्यात्मिकता को उसका केंद्रीय तत्व। देश की वर्ण एवं जाति व्यवस्था के दोषों के लिए उन्होने धर्म और जाति को सर्वथा निर्दोष पाया उनका कथन या कि धर्म का संबंध केवल आत्मा से है और सामाजिक विषयों में हस्तक्षेप करना उसका प्रयोजन नहीं है। दोष धर्म का नही,क्योंकि हिंदु धर्म तो तुम्हे सीखता है कि प्रत्येक प्राणी स्वयं तुम्हारी आत्मा का ही नाना रूपों में विकास है। दोष यह है कि हमने इस ज्ञान को व्यावहारिक रूप नहीं दिया तथा सहानुभूति एवं हृदय का उपयोग नहीं किया। इस स्थिति को हम धर्म का नाश करके नहीं वरना हिंदू धर्म के महान उपदेशो के अनुसार आचरण करके तथा उसके साथ बौध्द धर्म की अदभुत सहानुभूति को संयुक्त करके ही दूर कर सकते है।[२] विवेकानंदजीने हिंदु धर्म की निर्दोषता एवं सर्वश्रेष्ठता के प्रतिपादन के साथ, इसी कारण उसके क्रूर आघातों की भर्त्सना करत हुए कहा है पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नही जो हिंदु धर्म के समान गरीबो और नीच जातीवालो का गला इतनी क्रूरता से घोंटता हो प्रभ ने मुझे दिखा दिया है कि इसमे धर्म का दोष नही वरन दोष उनका है जो हिंदु धर्म के अंतर्भूत होते हुए भी ढोंगी और दंभी है, जो परमार्थिक और व्यावहारिक सिध्दांतो के रूपमें उनके प्रकार के अत्याचार के अस्त्रों का निर्माण करते रहे।[३] स्वामी विवेकानंद जातिव्यवस्था की लाभ-हानि की गहराई से परीक्षा करते है। वे मानते है कि इस व्यवस्था से समाज वर्गो मे बँटकर भी एक जाति के सभी सदस्य एकता के सुत्र में बँधते है,व्यक्तिगत या सामाजिक प्रधानता के लिए संघर्ष नहीं होता और व्यवसाय वंशानुगत हो जाता है; परंतु इसकी बडी हानी यह है कि प्रतियोगिता नष्ट हो जाति है। जिसके कारण देश की राजनीतिक अवनंति हुई और विदेशी जातियाँ से पराभूत होना पडा।[४] वे मानते है कि यह; ईश्वरप्रदत्त एक सबसे महान सामाजिक संस्था है किंतु विदेशियों के अत्याचार तथा घोर अज्ञानी एवं अभिमानी ब्राह्मणों के कारण इसमें अनेक दोष-बाधाएँ आई परंतु यह संस्था अतीत के साथ भविष्य में भी अपने उद्देश में सफल होगी।[५]

विवेकानंदजी ब्राह्मण, ब्राह्मणत्व, पुरोहित पर नवीन दृष्टि से विचार किया और उनके गुणावगुणों एवं उपयुक्तता-अनुपयुक्तता पर गंभीर टिप्पणी करके युग के चिंतन को

 Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani ISBN :978-93-5240-089-8

उदघाटित करते है। उनका मत है कि आरंभ में सब ब्राह्मण थे तथा आर्यो मे सर्वोच्य जाति ब्राह्मण थी। ये ब्राह्मण धार्मिक, नीतिवान,सदाचारी,सज्जन,उदार,निस्वार्थी, ज्ञान एवं प्रेम प्रसूत शक्ति के संपादक, प्रचारक तथा भगवान के भक्त होते थे।[६] ऐसे आध्यात्मिक साधना संपन्न महात्यागी ब्राह्मण ही हमारे आदर्श है। [७] मनुष्यत्व के चरम आदर्श है। ऐसे आदर्श और सिद्ध पुरूष की रक्षा करना चाहते है और कहते है कि इसका लोप कदापि नहीं होना चाहिए। विवेकानंद कहते है कि सच्चा ब्राह्मणत्व सदगुणों का खजाना है और ब्राह्मणों ने जीवन के उच्चतर उद्देश्यों तथा संस्कृति के महत तत्वों का खजाना जब से जनसाधारण के लिए बंद कर दिया, तभी भारत गुलाम हुआ और अवनति हुई।[८]

विवेकानंद कहते है कि ब्राह्मणों ने धर्म-शास्त्रों पर एकाधिकार जमाकर विधि-निषेधों को अपने ही हाथ में रखा था और भारतकी अन्य जातियों को नीच कहकर अनेक मन में विश्वास जमा दिया था कि वे वास्तव में नीच है । यदि हम किसी व्यक्ति को हरवक्त हरसमय तू नीच है नीच है कहते रहेगे तो उस व्यक्ति की धारणा भी वास्तव में नीच हूँ के समान बनती है । ब्राह्मणों ने संचित ज्ञान और संस्कार पर एकाधिकार कर अन्य जातियों को उससे वंचित किया । एकाधिकार को समूल नष्ट करने के लिए वे ब्राह्मणों को आह्वान करते है उदबोधन करके चेतावनी भी देते है प्रत्येक मनुष्य में एक ही शक्ति है। किसी में अधिक प्रकट हुई है, किसी में कम,वही सामर्थ्य सब में अत:वेदांत के अनुसार जन्मगत उच्च-नीच भेद का कोई अर्थ नही है । वे अन्य जगह पर लिखते है कि मेरा अनुभव यही रहा है कि सभी दोषों की उत्पति जैसा कि हमारे शास्त्र कहते है, भेदभाव में विश्वास रखने के कारण होती है और समानता में सर्वभूतों के अंत:स्थित एकतत्व में विश्वास करने से सर्व हितो की प्राप्ति होती है यही महान वैदांतिक आदर्श है।[९] विवेकानंद कहते है कि प्रत्येक हिंदु दुसरे हिंदु का भाई है वह चाहे मोची, मेहतर, मूर्ख, निर्धन,अपढ या निम्न जाति का कोई भी भारतवासी हो वे सब तुम्हारे भाई है और इस प्रकार सारा देश ही नीचता कायरता तथा अज्ञान के गहरे गर्त में बिलकुल डूब गया है।[१०]

विवेकानंद ने पुरोहित और पुरोहिती की तीव्र भर्त्सना की है वे मानते है की पुरोहित का आदर्श रूप वह था जब वह देवताओं से संबंध स्थापित करता था और देवताओं के समान उसकी पूजा होती थी । वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति, ज्ञान विज्ञान, प्रेम और त्याग वैराग्य से सार्वजनिक हित एवं कल्याण की अपनी प्रवृत्ति को बढाता था और उसे अपने जीवन शोषीत से उसके अंकुर को सींचता था लेकिन अपनी प्रभुत्व शक्ति विशेषाधिकार अकर्मण्यता, छल और पाखंड के कारण पुरोहित मकडी के समान अपने है फैलाए हुए जाल में फँस गए है । उन्होनें जिस श्रंखला से दूसरों के पैरो को बाँधा था वह अब उन्हीं के पैरों को सहस्त्र गुना जकड रही है और उनकी गति खेकडे प्रकार से अवरोध कर रही है । उस जाल को श्रृंखला को तोड फोड दो तब तो पुरोहित की पुरोहिती जड तक हिल जाएगी।विवेकानंद ने उच्च वर्ग अथवा अभिजात वर्ग एवं कुलिन वर्ग में ब्राह्मण क्षत्रिय एवं

Dist. Parbhani Late Ramesh Sonpeth College



ISBN :978-93-5240-089-8

वैश्य जाति को सम्मिलित किया है और निम्न वर्ग में सभी शुद्र जातियों, निर्धन एवं अशिक्षितों तथा ग्रामीणों की गणता की है।भारत की जनता को दो भागों में बाँटकर एक माली मोची आदि शेष निम्न वर्ग। विवेकानंद मानते है कि उच्च वर्ण के लोंग सजीव नही है उनके आर्यो की संतान होने के अहंकार तथा प्राचीन भारत के गौरव का अभिमान करने के वायदे निरर्थक एवं निष्प्राण है। क्या उच्च वर्ण के लोंगों का यही काम है कि वे निम्न जाति के लोंगों की मनुष्यता नष्ट कर दे,उन्हे भिखारी बना दे, उन्हे ईसाई बनने पर विवश करें, उन्हे सदैव दास अथवा हिंस्र पशु बना दें तथा उन में मनुष्य होने का भाव ही खत्म कर दें।[११] वे उच्च वर्ण के ऐसे शिक्षित लोंगों को घृणाके पात्र कहते हैं, जो निर्धनों एवं दलितो के खर्च पर शिक्षित है अथवा गरीबों को कुचलकर धनी बने है और फिर भी देश के बीस करोड निवासियों को भूखा व असभ्य बना रहने देते है।[१२] वे स्पष्ट शब्दों मे उच्च घराने में जन्म लेनेवाले और विशेष अधिकार रखनेवाले लोंगों को अपने हाथों से अपनी चिता तैयार करने की बात करत है। इसका कारण यह है कि उच्च वर्ग के नाश के बिना नवभारत की निर्मिती नही हो सकती नवभारत का उदय किसान, मोची, मेहतर, छोटे व्यापारी श्रमिकों के हांथो से होगा। वे उच्च वर्ण के लोंगो से इसलिए कहते है तुम अपने को शून्य मे लीन करके अदृश्य हो जाओ और अपने स्थान में नवभारत का उदय होने दो। नवभारत का उदय हल चलानेवाले किसानों की कुटिया से मजदूर मोचियों और मेहतरों की झोंपडियों से बनिए की दुकान से रोटी बेचनेवाले की भट्टी के पास से होगा।आम जनता सहस्त्रों वर्षो से अत्याचार सहते आई है उन्होने आश्चर्यजनक धैर्य शक्ति प्राप्त कर ली है वे हमेशा विपत्ति सहते रहकर अविरल जीवन शक्ति प्राप्त हो गई है मुठ्ठी भर अन्न से पेट भरकर वे संसार को जी रहे है।उनको तुम केवल आधी रोटी दे दो और देखो कि सारे संसार का विस्तार उनकी शक्ति के समावेश के लिए प्रर्याप्त न होगा। उनके रक्तबीज मे अक्षय जीवन शक्ति भरी है । इसके अलावा उनमें पवित्रता और नीतियुक्त जीवन आनेवाला है, जो संसार में अन्यत्र दुर्लभ है ।हमारे देश में नीच जाति में जनम लेने का अर्थ है कि मानो सदा के लिए नष्ट होना। यह कैसा अनाचार है देश के इन गरीबों का कोई विचार नही करता। वे देश के मेरूदंड है जो मेहनत से अन्न उत्पन्न करते है। ये मेहतर, मजदुर, किसान आदि एक दिन काम बंद करगें तो शहरों मे घबराहट फैल जाएगी उनके साथ कौन सहानुभुति रखनेवाला है इस देश के दस बीस लाख साधु और दसएक करोड ब्राह्मण इन गरीबों का रक्त चूसते है पर उनके सुधार का रती भर प्रयास नही करते वह कोई देश है या नरक।" वास्तव में देश के नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर सभी उच्च वर्णीय समाज के भाई है और सभी का रक्त एक ही है ।अतःब्राह्मण तथा अन्य उच्च वर्ण का यह दायित्व है कि वे इस जातियों के उद्धार की चेष्टा करे ।तथा हम सभी को मनुष्य बनना होगा । हमे ऐसे धर्म सिद्धांत तथा शिक्षा की आवश्यकता है जो हमे मनुष्य बना सके। हमें जो भी शरीरिक मानसिक और अध्यात्मिक दृष्टिसे दुर्बल बनाए वह विष के समान त्याज्य है । मनुष्य केवल

 ISBN :978-93-5240-089-8

मनुष्य भर चाहिए उनकी प्रबल इच्छा थी कि बडी जातियों और छोटी जातियों में भाईचारे की भावना का विकास हो पारस्पारिक सहानुभूति और प्रेम हो तथा उच्च जाति के लोग गाँवो से जाकर वहाँ घुल मिल जाएँ क्योंकि देश के दारिद्रता और अज्ञता को देख उन्हे नींद नही आती थी। उन्हे निम्न जातियों की शक्ति और क्षमतापर अट्ट विश्वास था। वे निर्बलों को सबलों से अधिक अवसर देनें के पक्षमें है जा आज की आरक्षण नीति से भी आगे रहा है।

अंत: विवेकानंद ने अपने युगानुरूप दलित दर्शन से एक नई स्मति की रचना की, उसमें नए भारत की दलित चेतना की बुनियाद के साथ आधुनिक दलित विमर्शके चेतना भी थी।

**संदर्भ**


१ विवेकानंद रचनावली खंड २
२ युगनायक विवेकानंद खंड २
३ वही
४ विवेकानंद रचनावली खंड १
५ जाति संस्कृति और समाजवाद
६ वही
७ भारत और उसकी समस्याएँ
८ जाति संस्कृति और समाजवाद
९ वही
१० वही
११ वही
१२ विवेकानंद रचनावली खंड
१३ जाति संस्कृति और समाजवाद


Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani